

न्यः सस्यानि समुपादयत् MBh. 12, 946. परीक्ष्यकारी युक्तश्च सम्यक्समुपा-
दयेत् । देशकालावभिप्रेतौ ताभ्यां कलमाप्नुयात् ॥ Ort und Zeit entstehen
lassen so v. a. ruhig abwarten 49 12.

— उप 1) sich an Jmd machen, anfallen: वत्सो धारुर्निव मातरं (कृ-
त्या) तं प्रत्यगुपं पद्यताम् AV. 4, 18, 2. — 2) gelangen, kommen zu, in:
यमुनातटमुपपेदे PANKAT. 9, 5. तिर्यग्योनिसकृन्नेषु कदाचिदेवतास्वपि । उप-
पद्यति संयोगाद्गुणैः सक्तु गुणान्नयात् ॥ MBh. 12, 11264. zum Lehrer kom-
men, sich als Schüler in die Lehre begeben bei (gen. acc.): तस्मै स विद्वानु-
पपन्नाय प्राक्तु ved. Cit. in VERĀNTAS. (Allah.) No. 19. वेदान्तकृत्यं कृत्स्न-
महं सत्यपराक्रम । उपपद्यस्व कौत्सेय प्रसन्नो ऽहं ब्रवीमि ते ॥ MBh. 3,
3081. शिष्यवह्नां तु पृच्छामि उपपन्नो ऽस्मि ते ऽनघ 1, 1191. भवत्समुपपन्नाः
स्मः शिष्यत्वेन सुच. 1, 1, 14. — 3) (wiederholend) einfallen: अर्धयमिति
हृ विश्वामित्र उपपयाद् AIT. Ba. 7, 17. — 4) zu Etwas (acc. und dat.)
gelangen, — kommen so v. a. theilhaftig werden, in einen Zustand tre-
ten, antreten: अर्धपूर्वपतिं कुमारीं पतिरुपपन्नः, अर्धपूर्वपतिः कुमारी पतिमु-
पपन्ना Schol. zu P. 4, 2, 13. मद्रक्त एतद्विज्ञाय मद्रवायोपपद्यते Bhag. 13,
18. स स्वर्गायोपपद्यते MĀRK. P. 29, 13. यत्र तत्र समुत्पन्नं गुणाधिवैपोपपद्यते
MBh. 13, 2518. अर्हणामुपपेदे BṛĀG. P. 1, 9, 41. पञ्चत्वमुपपेदावान् R. 2, 72,
50. प्रत्रय्यामुपपन्नानां त्रयाणाम् ६, 8, 27. — 5) gelangen zu so v. a. zu Theil
werden, zufallen: अर्धप्राप्तिं तु नरकः कृत्स्न एवोपपद्यते MBh. 1, 6 125.
तूर्तापि यश्च ते (स्वरस्य) भागो मानुषेषूपपत्स्यते HARIV. 10354. उपपन्नश्चिर-
स्याद्य भद्र्या ऽयं मम सुप्रियः MBh. 1, 5934. अर्थास्तस्योपपत्स्यन्ते 3, 3078. Spr.
1253. इत्थकोस्तु सुनः श्रीमान्विकुन्तिरुपपद्यत (in der anderen Recension
उत्पद्यत) R. GORR. 1, 72, 19. उपपन्नो गुणोपेतो भवान्यस्य सखा मम 4, 7, 2.
उपदेशप्रदातृणाम् — व्यसनं नोपपद्यते Spr. 487. — 6) statthaben, statthfinden,
zur Erscheinung kommen, vorkommen, eintreten, sich darbieten, vorhanden
sein, möglich sein: प्रयाण उपपद्यमाने ऀCV. GRUB. 1, 8. अतिरात्रयोः यो-
उशिनि विराडुपपद्यते LĀṬJ. 10, 3, 8, 7, 6, 8, 4, 9, 7, 9. पशानुपपद्यमाने KAUÇ.
138. तच्चान्यथोपपन्नम् anders gekommen VIKR. 20, 10. उपसर्जनं प्रधानस्य
धर्मतो नोपपद्यते M. 9, 121. 139. 156. अन्यदुत्तं ज्ञातमन्यदित्येतन्नोपपद्यते
40. 10, 102. बदन्यः संशयस्यास्य क्लेता नक्षुपपद्यते Bhag. 6, 39. R. GORR.
1, 11, 11. उपपद्येत्कथं देव स्त्रिया युधि ज्यो मम MBh. 5, 7378. ज्ञातास्ते
क्षुपपद्यते सत्त्वोद्विक्ताः स्वतेजसः erscheinen als so v. a. sind MĀRK. P.
49, 4. यदि पुंसो गतिः — कथंचिन्नोपपद्यते wenn das Gelangen zu Män-
nern auf keine Weise sich macht 13, 2223. तथा तवापि पुण्यस्य संख्या
नैवोपपद्यते das Zählen ist unmöglich MĀRK. P. 15, 72. नन्विदं भवता
कृतम् । पाश्वर्यं तथानिद्यं वने यदुपपद्यते ॥ R. 2, 91, 2. उपपन्नं vor-
handen, da seiend, zur Verfügung stehend KĀṬJ. ÇR. 1, 8, 17. 7, 2, 5. पु-
रुषः कैश्च कर्मभिः । उपपन्नान्मुखाभोगानुपाश्नाति MBh. 13, 6680. यथोपप-
न्नमाहारं तस्मै प्रादात् 2743. यथालभोपपन्नेषु भाजनेषु JĀG. 1, 236. यद्-
च्छुपोपपन्नेन कल्पयन्वृत्तिमात्मनः BṛĀG. P. 9, 2, 12. सर्वं सखे त्वय्युपपन्न-
मेतत् KUMĀRAS. 3, 12. उपपन्नं ननु शिवं सप्तस्वङ्गेषु RAGH. 1, 60. ०दर्शनं 3,
41. उपपन्नार्थं MBh. 3, 1438. अनुपपन्नार्थं NIB. 1, 15. BṛĀG. P. 5, 14, 5. ब-
हिःसहं विना जीवतो गृह्णसहमनुपपन्नम् unmöglich Z. d. d. m. G. 7,
310, N. 2. — 7) stimmen, zutreffen, zukommen, passen, angemessen
sein, sich ziemen ÇĀK. 15, 6. अस्मिन्नप्येतदुपपद्यते NIB. 8, 2. अत एव स-
र्वात्मनो ह्यतुः सर्वमन्नं भवतीत्युपपद्यते ÇĀMĀ. zu BṚH. ĀR. UP. S. 54.
Schol. zu Kap. 1, 69. SĪH. D. 4, 3. वधश्च पुरुषव्याधे तस्मिन्नैवोपपद्यते

R. 6, 9, 10. मा विषादं गमस्तस्मान्नैतद्व्युपपद्यते MBh. 3, 15179. Bhag.
2, 3. R. GORR. 2, 116, 4. नियतस्य तु संन्यासः कर्मणो नोपपद्यते Bhag. 18,
7. अतो ऽस्य राजन्यत्वात्प्रतिग्रहे नोपपद्यते SĪJ. zu RV. 1, 125, 1. तवा-
ग्रे गोपनं साधो न ममाप्युपपद्यते RĀGĀ-TAR. 1, 231. तवैव वृषभलं हि गो-
मुखस्योपपद्यते KATHĀS. 40, 9. उपपन्नं zutreffend, passend, angemessen,
entsprechend, in aller Ordnung seiend, ganz natürlich: सर्वमुपपन्नम्
ÇĀK. 8, 8. VIKR. 73, 1. उपपन्नस्ते तर्कः 26, 4. उपपन्नमिदं भद्रे यदेवम् —
धर्मं प्रति वचो ब्रूयाः MBh. 5, 6091. R. 4, 36, 13. पूजितश्चोपपन्नाभिराशीर्भिः
5, 7, 57. सुच. 1, 56, 20. VIKR. 20, 3. ÇĀK. 122. SĪJ. zu RV. 1, 125, 1.
Schol. zu ĠAIM. 1, 30. कर्तव्या इति बहुवचनमुपपन्नतरम् KULL. zu M. 2,
43. उपपन्नमेतद्वाजनि ÇĀK. 27, 18. तथेदमुपपन्नं मे मृगत्रूपस्य धर्षणम् R. 3,
49, 42. उपपन्नमिदं सुभु ज्ञातायाः कुशिकान्वये Bhāg. P. 9, 20, 15. PANKAT. 102,
13. ब्रह्मणो ऽपि — उपपन्नो ज्योतिःशब्दः ÇĀMĀ. bei WIND. SANCARA S. 129.
अनुपपन्नं nicht zutreffend u. s. w. LĀṬJ. 6, 2, 5. इदमेकत्वे नित्यत्वे ऽनुपपन्नम्
Schol. zu ĠAIM. 1, 9. अस्थाने कोप इत्यनुपपन्नं त्वपि MĀLAV. 37, 8. ÇĀK.
111, 1. VIKR. 33, 16 (nach der richtigen Lesart). RĀGĀ-TAR. 3, 517. SĪH.
D. 4, 1. — 8) entstehen (vgl. पद् mit उद्): कथं शरीरं च्यवते कथं चैवा-
पपद्यते MBh. 14, 455. पूर्वोपपन्नं viell. früher entstanden, älter 13, 229.
werden zu (dat.): अतिस्नेहा ह्यकाले च व्यसनोपपद्यते R. 6, 21, 34. — 9)
उपपन्नं im Besitz seiend von (instr.), verbunden mit, versehen mit: उपप-
न्ना तया भैमी त्वं च भैम्या N. 24, 34. (रयम्) उपपन्नं महाशस्त्रैः MBh. 5,
7102. उपपन्नो गुणोरिष्टैः 3, 2072. 2080. M. 9, 141. RAGH. 2, 16. भक्त्योपपन्नः
22. अतुवृत्तोपपन्नं M. 9, 244. MBh. 1, 4682. ÇĀK. 71, 12. VARĀH. BRH. S.
92, 13. — Vgl. उपपत्ति, उपपाडुक. — caus. 1) Jmd (acc.) in einen Zu-
stand (acc.) versetzen: कथंचिन्मृगशवाती विश्वासमुपपादित्वा sie wurde
dahin gebracht, dass sie Vertrauen fasste R. 5, 57, 12. — 2) Etwas (acc.)
zu Jmd (dat., ausnahmsweise loc.) gelangen lassen, zuführen, darbrin-
gen, darbringen, schenken: यानं वाकूनमोरिद्विज्ञातं ज्ञातोपपादितम् KĀM.
NĪTIS. 7, 30. यस्तु दोषवतीं कन्यामनाख्यायोपपादयेत् M. 9, 73, 72. नाति-
पर्याप्तमालदय मत्कुन्नेरथ भोजनम् । दिष्ट्या त्वमसि मे धात्रा भीतिनेवोपपा-
दितः ॥ RAGH. 13, 18. 14, 8. उपायनानि — पुलन्दैरुपपादितानि 16, 32.
ममोपपादितं साधु भाग्यैरेतत्पुराकृतैः MĀRK. P. 62, 19. भित्ताम् — ब्राह्म-
णोपपादयेत् M. 3, 96. अन्नस्याग्रं तदुद्भूय ब्राह्मणोपपादयेत् MĀRK. P.
29, 34. 34, 102. MBh. 1, 6271. तं दाडं वरुणायोपपादयेत् M. 9, 244. सर्व-
स्वं वेदविडुषे ब्राह्मणोपपादयेत् 11, 76 (= MBh. 12, 1245). विप्रस्य
पाणावुपपादयेत् 3, 212. (तस्य) निवासो द्वारका देवैरुपपादितो HARIV. 6808.
9798. पीठे देवस्य पूजकैरुपपादितम् — तिक्तशाकम् RĀGĀ-TAR. 5, 49.
यद्विप्रेषूपपादितम् JĀG. 1, 314. — 3) zu Stande —, zur Erscheinung
bringen, ausführen, in's Werk setzen: दीनाक्रयप्रसवेत्थानानि स-
र्वसन्नेषु पूर्वपत्त उपपादयेयुः LĀṬJ. 10, 1, 1. तदकर्तव्यमप्येतद्वाधवेणोपपा-
दितम् R. GORR. 2, 50, 10. 6, 100, 2. ते देवकार्यमुपपादयिष्यतः RAGH. 11,
91. प्रकृतिवैराग्यम् 17, 55. MĀRK. P. 70, 23. कार्यं येन त्यजति विधिना
स (विधिः) त्वैवोपपाद्यः MECH. 30. देवोदिष्टे — कर्मणोपपादय MBh. 1,
4663. यस्या दुष्टं मनः पूर्व कर्मणा चोपपादितम् HARIV. 9950. — 4) vorbrin-
gen, zur Sprache bringen Schol. zu PRAB. 77, 2. Schol. zu Kap. 1, 50. justify
BALLANT. — 5) zurechtmachen, herrichten, in einen angemessenen Zu-
stand bringen, anpassen: यदृशं तूष्यते बीजं नेत्रे कालोपपादिते M. 9,
36. हेम्यनेत्रलोच्यव्यधनैरुपपन्नैरुपपाद्य कर्षाम् सुच. 1, 56, 20. MBh. 13,